Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति एवं विकास

Krishana*

UGC NET, MDU (History Department)

सार - वर्ण-व्यवस्था हिन्दू धर्म में सामाजिक कार्योन्नती (ऊन्नती) का एक आधार है। हिंदू धर्म-ग्रंथों के अनुसार समाज को चार वर्णों के कार्यो से समाज का स्थाईत्व दिया गया है - ब्राह्मण (शिक्षाविद), क्षत्रिय (सुरक्षाकर्मी), वैश्य (वाणिज्य) और शूद्र (उद्योग व कला) ।इसमे सभी वर्ण को उनके कर्म मे श्रेष्ठ माना गया है।शिक्षा के लिए ब्राह्मण श्रेष्ठ, सुरक्षा करने मे क्षत्रिय श्रेष्ठ, वैश्य व शूद्र उद्योग करने मे श्रेष्ठ। वैश्य व शूद्र वर्ण को बाकी सब वर्ण को पालन करने के लिए राष्ट्र का आधारभूत संरचना उद्योग व कला (कारीगर) करने का प्रावधान इन धर्म ग्रंथो मे किया गया है।

----------X----------

हिन्दू वर्ण व्यवस्था

वर्ण.व्यवस्था हिन्दु धर्म में सामाजिक कार्योन्नती ;ऊन्नतीद्ध का एक आधार है। हिंदू धर्म.ग्रंथों के अनुसार समाज को चार वर्णों के कार्यों से समाज का स्थाईत्व दिया गया है . ब्राह्मण, क्षत्रिय और शुद्ध उद्योग व कला। इसमें सभी वर्ण को उनके कर्म में श्रेष्ठ। वैश्य व शूद्र वर्ण को बाकी सब वर्ण को पालन करने के लिए राष्ट्र का आधारभूत संरचना उद्योग व कला करने का प्रावधान इन धर्म ग्रंथों में किया गया है। सेवा राष्ट्र का कारक है उदाहरण के लिए सभी देश का आधार सेवा कर है।

मूल शब्द शुद्र द्विज, वर्ण चंडाला

वैसे तो मै जाती धर्म पर आज की परिस्तिथियों में अपना मत नहीं रखना चाहता क्योंकि आज से हमारे समाज को जोड़ती नही तोड़ रही है, परन्तु यह भी सच है अगर समाज किसी बात को लेकर गलत अवधारणा रखता हो तो हमे उस पर अपने विचार जरूर प्रस्तुत करने चाहिये, मै आज हिन्दू समाज और वर्ण व्यवस्था पर बात करना चाहुगा, क्योंकि वर्ण व्यवस्था को लेकर आज हमारे बीच काफी भ्रान्तिया है चाहे वो हिन्दू हो या किसी है, परन्तु आज में आप सभी भाइयों को बताना चाह रहा हुं की आज आप जो देख रहे हो वो इस व्यवस्था को बिगड़ा हुआ स्वरूप है, मै आज इस लेख के माध्यम से हिन्दु धर्म और वर्ण व्यवस्था पर आधारित कुछ तथ्य प्रस्तुत करना चाहुगा, हिन्दु धर्म के चार वेदों में सबसे पुराने वेद ऋग्वेद में जन्म के आधार पर किसी भी प्रकार की वर्ण व्यवस्था का उल्लेख नहीं है, और महाभारत के शांति पर्व में के पेज नंबर 10 से 177 नंबर श्लोक में लिखा है

ना विशेषो अस्ति वर्णाना सर्वम ब्राम्हमिद जगत।

ब्रहांण पूर्व सष्ट हि कर्मभि वर्णतान्गतम।।

अर्तार्थ जन्म से तो हम सभी ब्राह्मण होते है तत्पश्चात् हमारे कर्म के हिसाब से हमारा विभाजन होता है और जो व्यक्ति सिर्फ अपने किसी जाती विशेष में पैदा होने के कारण गर्वित महशूस करता है या हिन् भावना से ग्रसित होता है वह इश्वर का अपमान करते है तो हम उनका अपमान करते है मैंने अक्सर देखा है की लोग हमसे हमारी जाती पूछते हैं जो की सर्वथा गलत है और हम जिसमें मैं अपने आप को भी शामिल करना चाहुगा अभी इस मानसिकता से नहीं निकले है अब दूसरा पहलु हममे से कुछ लोग अपनी जाती बताने से शरमाते हैं तो मै उनसे कहना चाहुगा कि अगर आप इस तरह की भावना रखते है तो यहां ये सर्वथा गलत है मैं किसी जाती या किसी धर्म में जन्म लिया ये सब इश्वर की मर्जी है, आपकी नहीं और जो व्यक्ति इस आधार पर आपसे भेदभाव रखता है वह न सिर्फ इश्वर कमा मजाक उड़ाता है बल्कि साथ ही साथ अपनी शंकिर्ण मानसिकता का परिचय भी देता है ब्राह्मण के बारे में महाभारत के शांति पर्व में लिखा है की जो ज्ञानी है और जो इश्वर की हर कृति का सम्मान करता है उन्हें जानता है वह ब्राह्मण है और जो व्यक्ति वर्ण व्यवस्था को जाती के आधार पर बाटते हैं वो वास्तविक रूप से हमारे इस व्यवस्था के शत्रु है, आपको यह बताना चाहुगा की सम्पूर्ण विश्व के हर देश में वर्ण व्यवस्था कायम है, और जाती व्यवस्था तो

www.ignited.in

भारतीय समाज में आई एक घ्रणित विक्रती है, और कुछ सवार्थी लोगो ने इस व्यवस्था को कलंकित किया है, और यह सिर्फ कुछ सौ वर्षों के अन्तराल में हुआ है, अगर कोई भी व्यक्ति हिन्दु धर्म की विवेचना इन कुछ वर्षा और वर्तमान जातीय व्यवस्था के आधार पर करते हैं तो मेरा उनसे निवेदन है की वो हमारे वेदों का जाकर पड़े, जिनसे आज भी सारा विश्व सिख रहा है, भारतीय दर्शन के लोकप्रिय और व्यवहारिक ग्रन्थ गीता में लिखा है

ब्राह्मण क्षत्रिय विन्षा शुद्राणच परतपः।

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवे गुणिः।।

गीता ।।

चातुर्वण्य मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।

तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।।

गीता।।

अर्तार्थ ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र, वैश्य का विभाजन व्यक्ति के कर्म और गुणों के हिसाब से होता है, न की जन्म के गीता में भगवन श्री कृष्ण ने और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा है की की वर्णों की व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर होती है, भारतीय आध्यात्म में भागवान को भी वर्ण के हिसाब से बाटा गया है, ब्रम्हा, जिन्होने हमे इस संसार में लाया, दुसरे विष्णु जिन्होंने हमारा पालन किया और भगवन शिव जिन्हें आज पुरे भारत में सबसे ज्यादा पूजा जाता है, और जिन्हें कल्याण करने वाला या सेवा करने वाला कहा जाता है, और जो शिव लोगो की सेवा करते है या कल्याण करते है। उन्हें सबसे ज्यादा पूजा जाता है, यह बात अनुकरणीय है की वेदव्यास जिन्होंने महाभारत और बहोत सारे ग्रंथों की रचना की उनकी माँ शुद्र वर्ण में थी न की ब्राह्मण, और पुरातन या वैदिक भारतीय समाज में विवाह जाती देख कर कभी नहीं होते थे, ये जो आज आप देख रहे है ये हमारे समाज की विक्रति है न की जो हमारे वास्तविकता, महर्षि वाल्मीकि जिन्होंने रामायण जैसे महाकाव्य की रचना की उनका जन्म सूद्र वर्ण वाले पिता के यहां हुआ था। परंतु वो तो ब्राह्मण कहलाते है। भारतीय समाज में वर्णों के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव कभी नहीं था। जो आज आपको दिख रहा है। आपकी जानकारी के कहुगा की भगवन श्रीराम की माता सुमित्रा के पिता ब्राह्मण वर्ण के और माता सूद्र वर्ण की थी। जिस भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत है उनके पिता दुष्यंत क्षत्रिया थे और माता मेनका रूपी अप्सरा की पुत्री शकुन्तला थी। भगवान श्री क्रष्ण की माता असुर वंस की थी जबकि पिता वासुदेव क्षत्रिय थे। ये सब बाते यह चरितार्थ करती है की भारतीय समाज या हिन्दू दर्शन में किसी जातीगत भेद का उल्लेख कभी नहीं रहा, और वर्ण व्यवस्था आज हर जगह है। सिर्फ नाम बदल गया है और जो व्यक्ति विकृत ग्रथों के आधार पर हिन्दु दर्शन को परिभाषित करते है उनसे मेरा निवेदन है कि, भारतीय समाज के आधार पर स्तम्भ चार वेदों जिनका अनुसरण विश्व के सारे देश कर रहे हैं।

भारतीय वर्णव्यवस्था प्रो॰ ज्ञानचन्द्र रावल, यज्ञदेव..... मैकाइबर और कूल आदि समाजशास्त्रियों ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया है कि सामाजिक वर्ग विश्व के सभी समाज में किसी न किसी रूप में अवश्य पाये जाते हैं। कहीं पर सामाजिक वर्गों का निर्माण जन्म के आधार पर तो कहीं पर धन के आधार पर। इतना निश्चत है कि सामाजिक वर्ग प्रत्येक समाज में अवश्यमेव पाया जाता है। मनुष्य की प्रवृत्तियों तथा व्यवसायों के आधार पर समाज का विभाजन संसार के सभी देशों में पाया जाता है। इग्लैण्ड के प्रसिद्ध विद्वान् एच॰जी॰ वैल्स के अनुसार वैज्ञानिक प्रवृतियों के आधार पर समाज-विभाजन से समाज का श्रेष्ठ विकास होता है तथा उसकी शक्ति बढ़ती है। किग्सले डविस और मूर के अनुसार श्समाज अपनी स्थिरता एवं उन्नति के लिए अपने व्यक्तित्व को उनकी योग्यता एवं प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए सामाजिक स्तरीकरण को एक सुनियोजित नीति को अपनाया तथा कार्यात्मक दृष्टि से समाज को चार वर्गों में विभाजित किया। जिन्हें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के नाम से जाना जाता है। वर्ण.व्यवस्था भारतीय सामाजिक संगठन के मौलिक तत्व के रूप में पायी जाती है। भारतीय संस्कृति में समाज में प्रत्येक व्यक्ति का स्थान तथा उससे सम्बंधित कार्य उसकी मूलभूत प्रवृत्तियों यानी गुणों के आधार पर निश्चित होता था। 1- वैविध्य के आधार पर वर्ण व्यवस्थाः सब मनुष्यों में सब बातें एक समान नहीं है। फिर भी जो बातें सभी में समान भाव से पाई जाती हैं उनकी मात्रा समान नहीं है। हितोपदेश कार का कथन है- आहारनिद्राभयमैथुन च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्श् अर्थात् भोजन, निद्रा, भय और नर-मादा का सहवास-ये पशु और मनुष्यों में समान है। प्राणी-मात्र में जो सामान्य बातें पाई जाती हैं उनका यह अच्छा परिगणन है। किन्तु आहार तथा निद्रा आदि भी सब समान मात्रा में नहीं पाये जाते। जहां प्रकार भेद नहीं होता वहां मात्रा.भेद अवश्य है। इस प्रकार भारतीय मनीषियों ने मानव समाज के संगठन के लिए जो सविंधान तैयार किया था उसमें इस बात का विशेषध्यान दिया था। गणित शास्त्र में यह बात स्वंयसिद्ध मानी गई है,

कि विषम में सम जोड़ने से विषम उत्पन्न होता है। यथा . ..... आदि विषम संख्याएं हैं। इस में 22 जोड़ने से ..... होते हैं। इसी तरह यदि विषम को सम बनाना हो तो उसमें विषम अंक जोड़ना पडेगा। आश्चर्य है कि समाजशास्त्रा के आधुनिक पंडित सामाजिक संगठन के समय पर इस स्वंय सिद्ध को भूल जाते हैं। 2. पूंजीवाद, साम्यवाद और वर्णव्यवस्थाः बस, अब हम पूंजीवाद, साम्यवाद और वर्णव्यवस्था है। साम्यवाद अन्याय का विरोध करते हुए ईष्र्या को बीच में मिला देता है। और कहता है कि बड़ा.छोटा कोई नहीं। सब अधिकारों में भेद का होना आवश्यक है, परन्तु इसका आधार योग्यता ही होना चाहिए, जन्म नहीं। 3. वर्ण का अर्थः वर्ण शब्द ष्वृजष् वरणे से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है वरण अथवा चुनाव करना। आप्टे संस्कृत.हिन्दी कोश के अनुसार. श्रंग, रोगन, रंग, रूप, सौन्दर्य, मनुष्य श्रेणी, जनजातिया कबीला, जाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तथा शूद्र वर्ण के लोग) इस प्रकार, व्यक्ति अपने कर्म तथा स्वभाव के आधार पर जिस व्यवस्था का चुनाव करता है, वही वर्ण कहलाता है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर्ण शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में रंग अर्थात् काले और गौरे रंग की जनता के लिए किया गया है और प्रारंभ में आर्य तथा दास इन वर्णों का ही उल्लेख है। डॉ. घुरिये ने ऐसा ही लिखा है कि आर्य लोगों ने यहां के आदिवासियों को पराजित करके उन्हें दास या दस्यु नाम दिया और अपने तथा उनके बीच अन्तर प्रकट करने के लिए वर्ण शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ रंग.भेद से है।श् वर्ण के इससे ऐसा आभास होता है कि इस शब्द का प्रयोग आर्यो तथा दस्युओं के बीच पाये जाने वाले प्रजातीय अन्तर को स्पष्ट करने के लिए हि किया गया है। लेकिन यथार्थ में डॉ. घुरिये आदि की यह मान्यता अमान्य एवं दोषपूर्ण है। इसी तरह पाण्डुरंग वामन काणे की मान्यता है कि श्प्रारंभ में गौर वर्ण का प्रयोग आर्यों के लिए तथा कृष्ण वर्ण का दासों या दस्युओं के लिए किया गया जाता था। धीरे धीरे वर्ण शब्द का प्रयोग गुण तथा कार्मों के आधार पर बने हुए चार बड़े वर्गों के लिए किया जाने लगा। वास्तव में वर्ण शब्द का अर्थ शाब्दिक दृष्टि से नहीं समझा जा सकता। वर्ण का सम्बन्ध व्यक्ति के गुण तथा कर्म से पाया जाता है। जिन व्यक्तियों के गुण तथा कर्म एक से थे यानी जिनमें स्वभाव की दृष्टि से समानता थी, वे एक वर्ण के माने जाते थे। इस बात का पुष्ट प्रमाण श्रीमद्गीता में समुपलब्ध् होता है श्चातुवर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्मविभागशःश् अर्थात् मैने ही गुण और कर्म के आधार पर चारों वर्णों की रचना की है। इससे स्पष्ट होता है कि वर्ण.व्यवस्था की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भिन्न.भिन्न विचार व्यक्त किये गये हैं। वेद, उपनिषद्, महाभारत, गीता, मनुस्मृति तथा अन्य धर्म.ग्रन्थों में इस व्यवस्था पर विस्तृत चर्चा की गई है। यहां इन्हीं ग्रन्थों में विद्वानों द्वारा प्रकट किए गए विचारों के आधार पर हम वर्णों की उत्पत्ति को प्रस्तुत कर रहे हैं। यजुर्वेद के 32वें अध्याय में वर्णों की उत्पत्ति के संबंध में कहा गया है कि श्ब्राह्मण वर्ण विराट पुरूष अर्थात् परमात्मा के मुख के समान हैं, क्षत्रिय उसकी भुजाये हैं, वैश्य उसकी जंघाएं अथवा उदर हैं और शूद्र उसके पांव हैं।श् इसी तरह ऋग्वेद मंडल, सूक्त, मंत्र लिखा है कि श्ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः। श्ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।श् यहां ब्राह्मण की उत्पत्ति विराट् पुरूष के मुख से हुई है ऐसा कहने का अभिप्राय ब्राह्मण शरीर में मुखवत् सर्वश्रेष्ठ है। अतएव ब्राह्मणों का कार्य समाज में बोलना तथा अध्यापकों और गुरूओं की तरह अन्य वर्णस्थ स्त्री.पुरूषों को शिक्षित करना है। इसी प्रकार भुजाएं शक्ति की प्रतिक हैं, इसलिए क्षत्रियों का कार्य शासन.संचालन एवं शस्त्र धारण करके समाज से अन्याय को मिटाकर लोगों की रक्षा करना है। इसीलिए श्रीराम ने वनवासी तपस्वियों के सम्मुख प्रतिज्ञा की थी कि श्निशिरहीन करू मही भुज उठाय प्रण कीन्हश् ष्वाल्मीकि ने लिखा है. श्क्षत्रियः धनुर्सध् त्ते क्वचित् आत्र्तनादो न भवेदितिश् अर्थात् क्षत्रिय लोग अपने हाथ में इसीलिए धनुष धारण करते हैं कि कहीं पर किसी का भी दुःखी स्वर न सुनाई दे। जघां, बलिष्ठता एवं पुष्टता की प्रतीक मानी जाती हैं, अतएव समाज में वैश्यों का कार्य कृषि तथा व्यापार आदि के उत्पत्ति उस विराट् पुरूष के पैरों से मानी गयी है अर्थात् पैरों की तरह तीनों वर्णों के सेवा का भार अपने कधें पर वहन करना है। विराट् पुरूष के शरीर के विभिन्न अंगों से चारों वर्णों की उत्पत्ति का भाव यह है कि चारों वर्णों में यद्यपि स्वभावगत भिन्न.भिन्न विशेषताएं पायी जाती हैं, तथापि एक ही शरीर के अलग.अलग भाग होने के कारण उनमें पारस्परिक अन्तर्निर्भरता पायी जाती है।

निष्कर्ष

आज मानव जाति अपने विवके के अनगिनत सपनों को पार कर विज्ञान की चरमोन्नति के युग में सतत आगे बढ़ रहा है। ऐसे युग में आगे चली आ रही अस्पृश्यता हमारे देश के नाम पर कलंक है जिसका भारतीय समाज में कोई स्थान नहीं हैं जिस धर्म में वसुधैव कटुम्बकम सर्वे भवन्तु सुखिन तथा ईश्वर सर्वभूतानाम जैसे आदर्श हो, वहां अस्पृश्यता जैसी हेय कुप्रथाओं का कोई औचित्य नहीं है।

संदर्भ

1. जायसवाल सुवीस, वर्णजाति व्यवस्था।

www.ignited.in

2. द्विवेदी आर.एस. प्राचीन भारतीय इतिहास।

3. आर.एस. शर्मा प्रारम्भिक भारत का परिचय।

4. आर.एस. शर्मा शुद्रों का प्राचीन इतिहास।

5. सुरेन्द्र कुमार द्वारा लिखित मनुस्मृति।

6. प्रियम अजय सिंह विकिपीड़िया।

7. राय राजेश कुमार हिन्दु वर्ण व्यवस्था शुद्रों का इतिहास।

Corresponding Author

Krishana*

UGC NET, MDU (History Department)

parvinderdangi80@gmail.com